ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -1| Jan - Jun 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 544-555

उत्तराखण्ड की अनुसूचित जनजातियों का अध्ययन

दीपिका पाण्डेय
शोधार्थी
शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत
ई–मेल : diptipandey787@gmail.com
प्रो0 (डॉ0) सपना शर्मा
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

सारांश

आधुनिकता की दृष्टि से असंस्कृत माने जाने वाले तथा आदिम और प्राचीन मानव सभ्यता का प्रतिनिधित्व करने वाले, जंगलों–पहाड़ों व पठारों के निवासी, मानव समुदाय को आदिवासी या जनजाति कहा जाता है। उत्तराखड में मुख्यतः पाँच जनजातियाँ निवास करती हैं, जिसमें थारू, जौनसारी, भोटिया, बुक्सा व राजी हैं। इस शोध पत्र में यह प्रस्तुत किया गया है कि अपनी रचनात्मक कला, शैक्षणिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का प्रदर्शन करते हुए उत्तराखण्ड की जनजातियों ने अपनी वर्षों पुरानी पारंपरिक जीवन शैली को यथावत् रखा है। वे आदिम जीवन की विशिष्ट संस्कृति और लक्षणों का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा उनके पारम्परिक मापदंड और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाएँ उनको निर्धारित करती है।

मुख्य शब्द– जनजाति, सांस्कृतिक, पारम्परिक।

प्रस्तावना–

उत्तराखण्ड में निवास करने वाली अनुसूचित जनजातियों में थारू, जौनसारी, बोक्सा, भोटिया व राजी जनजाति प्रमुख हैं जिन्हें 1967 से अनुसूचित जनजाति घोषित किया गया था। भारत के संविधान में अनुच्छेद 342 अनुसूचित जनजाति से संबंधित है। उत्तराखण्ड राज्य की सर्वाधिक जनसंख्या वाली थारू जनजाति है और सबसे कम जनसंख्या वाली राजी जनजाति है। उत्तराखण्ड राज्य में अनुसूचित जनजातियों को 4 प्रतिशत आरक्षण प्राप्त है। अनुसूचित जनजातियों की सबसे अधिक जनसंख्या वाला जिला उधम सिंह नगर है। तत्पश्चात् देहरादून का द्वितीय स्थान है। एक भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और मुंडा जनजाति के लोकनायक

भगवान बिरसा मुंडा की 146वीं जयंती के अवसर पर राज्य जनजातीय अनुसंधान सह–सांस्कृतिक केन्द्र और संग्रहालय (टी0आर0आई0) ने जनजातीय मामलों में मंत्रालय के सहयोग से 11 नवंबर से 13 नवंबर 2021 तक उत्तराखण्ड जनजातीय महोत्सव का आयोजन किया।

आजादी के अमृत महोत्सव में बड़ी संख्या में आगंतुकों ने स्थानीय कला और शिल्प प्रदर्शनी में भाग लिया और उत्तराखण्ड, झारखंड, उडीसा, मणिपुर, उत्तर प्रदेश के आदिवासी समुदायों और लगभग 15 राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों ने उल्लेखनीय कलाकारों और शिल्पकारों की आकर्षक और उत्साही भागीदारी का स्वागत किया। उत्तराखण्ड के एकलव्य मॉडल आवासीय के छात्रों ने भी उत्सव में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प, आभूषण, शीतकालीन वस्त्र, संग्रह, आदिवासी संलयन फैशन, पेंटिग, कालीन, पारम्परिक दवाईयाँ इत्यादि प्रदर्शित किया। जौनसार की संस्कृति और परंपरा को प्रसिद्ध बनाने में यहाँ रहने वाले आदिवासी समुदाय का भी विशिष्ट योगदान है जो उत्तराखण्ड में कई स्थानों पर निवास करती हैं। इस जनजाति समुदाय की अपनी विशेष संस्कृति और परंपरा है।

उत्तराखण्ड में मुख्यता पाँच जनजातियाँ निवास करती है जिनमें थारू, जौनसारी, भोटिया, बुक्सा और राजी जनजाति प्रमुख हैं। जिनमें कि उनकी उत्पत्ति, विकास, शारीरिक गठन, राजनैतिक, धार्मिक व आर्थिक व्यवस्थाओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

उत्तराखण्ड की विभिन्न अनुसूचित जनजातियाँ

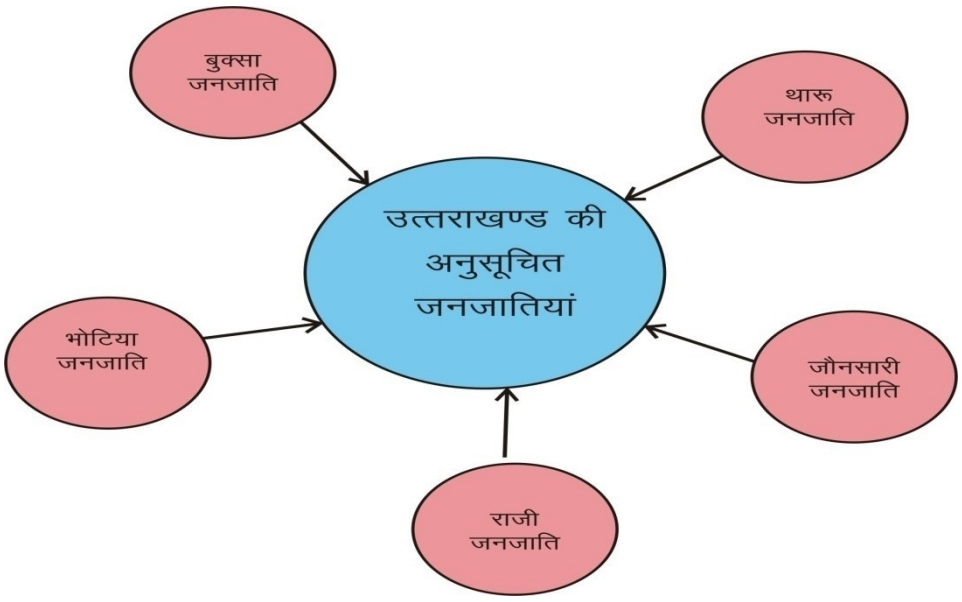

1. थारू जनजाति –

थारू जनजाति उत्तराखण्ड में निवास करने वाली जनजातियों में से सबसे बडी जनजाति है। कृषि आधारित थारूओं की बसावट उत्तराखण्ड के तराई से लेकर बिहार तक तथा उत्तर में नेपाल तक फैली हुई है। ये उत्तर प्रदेश में लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोण्डा और गोरखपुर जिलों में भी निवास करती है।

उत्तराखण्ड में इनकी आबादी मुख्यतः उधम सिंह नगर की खटीमा तहसील व सितारगंज तहसील में केंद्रित है।

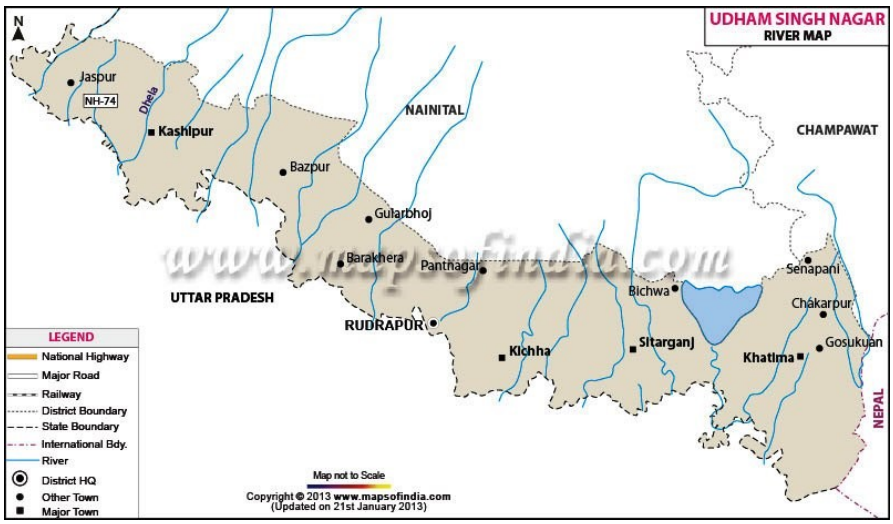

मानचित्र 1: जनपद उधम सिंह नगर

सन 1951 में सर्वप्रथम 214 जनजातियों को अनुसूचित जनजातियों का दर्जा दिया गया तो थारू जनजाति उस सूची में नहीं आ सकी। इसके 1967 में (द कान्सटिट्यूशन आर्डर 1967 – 78 के अंतर्गत) उत्तर प्रदेश के भोटिया, बोक्सा, जौनसारी और राजी के साथ थारू को भी अनुसूचित जनजाति का दर्जा दे दिया गया।

थारू जनजाति का अग्रांकित बिंदुओं के आधार पर वर्णन किया गया है।

1. **उत्पत्ति एवं विकास**– थारू शब्द की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों में मैतक्यता भी है। जनगणना रिपोर्ट (1867–68) में थारू शब्द की उत्पत्ति 'तरूवा' शब्द से मानी जाती है। जिसका अर्थ भीगना होता है। नेसफील्ड (1855–115) ने थारू शब्द की उत्पत्ति थार मरूस्थल से मानी है। क्रुक ने थारू शब्द की उत्पत्ति दारू से मानी है। नोवेल्स ने ''गोस्पेल इन गोण्डा'' में इन्हें थरूवा कहा है। नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज (1881–359) ने इनके लिए "थथरना" शब्द का प्रयोग किया है और कुछ विद्वान इन्हें मंगोलिया नस्ल का तथा ऐतिहासिक किरात वंशज मानते हैं।
2. **सामाजिक संस्कृति एवं पृष्ठभूमि** –थारू जनजाति की सामाजिक पृष्ठभूमि प्रकृति से अत्यधिक गहराई से जुड़ी है। जो कृषि व पशुपालन पर आधारित है। यह समाज पितृसत्तात्मक होते हुए भी महिलाओं को उच्च स्थान देता है जहाँ पंचायत सामाजिक व्यवस्था संभालती है।

- **वेशभूषा**– पारम्परिक परिधान के रूप में पुरूष धोती, अंगा, कुर्ता, टोपी व लम्बा साफा पहनते हैं तथा महिलाएँ लहंगा चोली धारण करती हैं। थारू जनजाति में महिलाओं व पुरूषों में गुदना (टैटू) गुदवाने की विशेष परम्परा है।

- **आवास**– ये मूल रूप से लकड़ी, पत्ते व नरकुल के बने मकानों में निवास करते हैं तथा दीवारों पर सुन्दर चित्रकारी के नमूने अंकित होते हैं।
- **प्रमुख भोजन**– भोजन के रूप में चावल विशेष रूप से खाया जाता है जिसे विभिन्न रूपों में खाते है विशेष रूप से चावल के आटे से बने भाप में पके पकवान बगिया/ढिकरी जिसे चटनी या करी के साथ खाया जाता है और घोघीं, दाल, चना, मटर तथा ज्वार इत्यादि विशेष रूप से खाया जाता है। प्रातःकालीन भोजन को '**कलेवा**' और दोपहर के भोजन को '**मिंगी**' और रात्रि के भोजन को '**बेरी**' के नाम से जाना जाता है।
- **शारीरिक गठन**– मजूमदार के अनुसार ये मंगोल प्रजाति से मिलते–जुलते हैं। कद छोटा, मुख चौड़ा व समतल नासिका युक्त होता है तथा तिरछे नेत्र, गाल की हड्डियाँ उभरी हुई, रंग भूरा–पीला, चेहरा और शरीर पर बहुत कम और पीले बाल होते हैं। वास्तविकता यह है कि थारूओं पर मगोलॉयड और भारतीय जनजातियाँ दोनों के ही मिश्रित शारीरिक लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।
- **भाषा**– थारू जनजाति में प्रायः स्थानीय भाषा का प्रयोग होता है। जिसमें सोन्हा, कफरिया, डंगोरा या मुख्य कोकिला भाषा प्रमुख हैं।

3. **आर्थिक व्यवस्था**– आर्थिक दृष्टि से थारू एक आत्मनिर्भर जनजाति है। जो अपनी आवश्यकताओं से संबंधित सभी वस्तुओं का स्वयं ही उत्पादन करते हैं। थारूओं की मुख्य आजीविका खेती ही है, तथा जमीन **से जुड़ने के** कारण यह स्थिर जनजातियों में से एक है। खेती के साथ साथ यह भोजन के लिए मत्स्य तथा वन्य जीवों का भी आखेट करते हैं। ये लोग स्वयं बढई, लुहार, सुनार, कुम्हार व स्वयं के लिए मकान बनाने का भी काम करते हैं। हस्तशिल्प में ये बहुत ही कुशल होते हैं जिनमें थारू महिलाएँ, टोकरी, चटाई, दरी और हाथ के पंखे बनाने में कुशल है।
4. **धार्मिक मान्यताएं और प्रथाएँ**– थारू जनजाति की धार्मिक मान्यताएँ प्रकृति हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म का मिश्रण है। प्राकृतिक देवता के रुप में सूर्य चन्द्रमा, नदी और जंगल के देवी देवताओं की पूजा करते है। जैसे– भूमसेन (पृथ्वी देवता) और गौरेया (पूर्वज देवता) तथा हिन्दू धर्म से प्रभावित है। और भगवान शिव (धूप बारिश और फसल के दाता) की पूजा करते है। तथा बौद्ध धर्म में थेरवाद का भी पालन करते है।

- **विवाह**– विवाह प्रथा के रुप में बदला विवाह प्रथा, तीन काठी विवाह, विधवा विवाह प्रथा, लठरवा भोज प्रचलित है।
- **त्यौहार**– ये दीपावली को शोक के रुप में मनाते हैं। ये माघी त्यौहार, दशहरा, होली इत्यादि त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाते हैं। जिसमें कि होली सबसे प्रमुख त्यौहार है। जो कि फाल्गुन मास की पूर्णिमा में 8 दिनों तक चलती है। जिसमें कि स्त्री व पुरुष खिचड़ी नृत्य करते हैं।
- **मृत्यु संस्कार**– प्रायः दो प्रकार से मृत्यु संस्कार को महत्वपूर्ण मानते है। पहली है प्राकृतिक मृत्यु जो व्यक्ति को स्वयं भुगतनी पड़ती है, और दूसरी है अप्राकृतिक जो दुष्ट आत्माओं, देवी–देवताओं के श्राप का प्रकोप और बीमारी के कारण होती है।

2. भोटिया जनजाति–

किरात वंशीय एक अर्द्ध घुमन्तू जनजाति है। ये अपने को खस राजपूत कहते हैं। यह पिथौरागढ़, चमोली, अल्मोड़ा, उत्तरकाशी जिलों के उत्तरी भागों में स्थित भागीरथी नदी, विष्णु गंगा नदी, नीति, व्यास, जोहार आदि वृहद हिमालय के ऊँचाई वाले क्षेत्रों में स्थित स्थान पर निवास करते हैं। कश्मीर में भोटा व हिमांचल प्रदेश में भोट तथा उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले के तिब्बत व नेपाल से सटे सीमावर्ती क्षेत्रों में इन्हें भोटिया कहा जाता है।

मानचित्र 2: जनपद पिथौरागढ़

1. **उत्पत्ति और विकास**– भोटिया जनजाति में माना जाता है कि ये तिब्बती मूल के हैं तथा खस जनजाति से अपनी उत्पत्ति मानते हैं, और शारीरिक बनावट से मंगोलॉयड प्रजाति से मिलते जुलते हैं।
2. **सामाजिक संरचना**–
   - **पितृसत्तात्मक व्यवस्था**– भोटिया समाज पितृसत्तात्मक और परिवार में बुजुर्गों को अत्यधिक सम्मान प्राप्त होता है, सम्पत्ति का विभाजन पिता के जीवित रहते हो जाता है तथा स्त्रियों को भी विशेष रूप से पुरूषों के समान ही अधिकार प्राप्त होते हैं।
   - **उपजातियाँ**– मारछा, तोल्छा, शौका, दरमियाँ, चौदासी, ब्यासी, जाड़, जेठरा व छापड़ा आदि उपजाति नामों से प्रचलित हैं, जो कि उत्तराखण्ड राज्य के पिथौरागढ़, चमोली, अल्मोड़ा तथा उत्तरकाशी जिलों के उत्तरी भागों में स्थित हैं। गढ़वाल के चमोली में मारछा व तोल्छा तथा उत्तरकाशी में जाड़ रहते हैं, कुमाऊँ के पिथौरागढ़ में जोहारी एवं शौका भोटिया रहते हैं।
   - **शारीरिक संगठन**– इनकी शारीरिक बनावट मंगोलायड प्रजाति से मिलती–जुलती है, जिसमें चेहरा चौड़ा और चपटा, गहरी काली आँखे, सीधे बाल, कद छोटा, सिर बड़ा, नाक चपटी और शरीर पर बालों की कमी दिखाई देती है।
   - **भाषा**– ये हिमालय की तिब्बती वर्मी भाषा व परिवार से संबंधित 6 बोलियाँ बोलते हैं।

- **वेशभूषा**– पारम्परिक तिब्बती वस्त्र पहनने को प्राथमिकता देते हैं जिसमें कि पुरूष प्रायः रंगा, गेजू या खगचसी, चुगाठी व बाखो पहनते हैं तथा स्त्रियाँ च्युमाता, च्यूं, च्यूकला, ज्युरूप, च्पुब्ती, ब्युज्य आदि वस्त्र धारण करती हैं।
- **प्रमुख भोजन**– भोटिया जनजाति भोजन के रूप में छाकू (भात), छामा (दाल, साग) तथा कूटो (रोटी) प्रमुख है। माँस इनका लोकप्रिय भोजन है। पेय पदार्थ में ज्या प्रमुख है, जो चाय पत्ती, नमक व मक्खन आदि से बनाया जाता है तथा जौ, गेहूँ, मडुवा, मक्का तथा बाजरे का सत्तू विशेष रूप से खाया जाता है।
- **आभूषण**– इस जनजाति में आभूषण का विषेश स्थान है। जिसे भोटाक्तिक बोली में साली–पुली कहा जाता है। बलडंग, खोंगली, मन्सली महिलाओं के गले के प्रमुख आभूषण हैं। वीरावाली, छाँकरी वाली, पतेली वाली सिर के आभूषण हैं, अँगूठी को लकक्षेप कहा जाता है।

3. जीवन शैली और अर्थव्यवस्था–

निवास– भोटिया जनजाति हिमालयी क्षेत्रों में रहने वाली एक अर्द्ध खानाबदोश जनजाति है। जिसके निवास स्थान मौसम और ऋतुओं के अनुसार बदलते रहते हैं। गर्मियों में ऊँचे पहाड़ों पर मैत नामक स्थलों पर रहते हैं और सर्दियों में निचले इलाकों में अपने पशुओं और परिवार के साथ मुनसा या गोण्डा भाग शीतकालीन आवासों में चले जाते हैं। जो उनके पारम्परिक ऋतु प्रवास का एक प्रमुख भाग हैं और उनके आवास के दौरान पड़ने वाले पड़ावों को खर्क कहते हैं।

4. मुख्य व्यवसाय– इस जनजाति का आर्थिक जीवन कृशि, पशुपालन, व्यापार व ऊनी दस्तकारी पर आधारित है। यह सीढ़ीनुमा खेती करते है। पारम्परिक कृषि (चावल, मक्का आदि) पशुपालन (याक, भेड़, बकरियां) और तिब्बत के साथ व्यापार करते थे, जो अब प्रायः कम हो गया है।

5. संस्कृति और त्यौहार–

विवाह प्रथा–

- भोटिया जनजाति में दामोला विवाह प्रथा पायी जाती है दामोला विवाह में बाराती वर के नाम पर दुल्हन को ले जाते हैं।
- भोटिया जनजाति के लोग विवाह को दायी कहते हैं, तथा सगाई की रस्म को धौंची कहते हैं।
- अंतःविवाही विवाह होते हैं, कुलों के मध्य विवाह प्रथा प्रचलित है, बाहरी विवाह को अच्छा नहीं माना जाता है।
- **प्रमुख त्यौहार**– लोसर (तिब्बत नववर्ष) सागा, दावा और होली, दीवाली जैसे प्रमुख हिंदू त्यौहार मनाते हैं। तथा कंडाली पर्व का विशेष महत्व है।
- **लोकगीत**– तुबेरा, वाज्यू, तिमली जैसे लोकगीत भोटिया जनजाति के जीवन का एक अभिन्न अंग है। जो इसकी संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं।
- **धार्मिक व्यवस्था**– भोटिया जनजाति के लोग बौद्ध धर्म और हिंदू देवताओं में ग्वाला, कैलाश पर्वत, नंदादेवी पर्वत, हाथी पर्वत की पूजा विशेष रूप से करते हैं तथा घंटाकर्ण

देवता की पूजा बुग्यालों में चरने वाले पशुओं की रक्षा के लिए करते हैं तथा सांई देवता की पूजा खोये पशुओं का पता लगाने के लिए करते हैं।

3. जौनसारी जनजाति–

जौनसारी जनजाति राज्य की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति समुदाय व गढ़वाल का सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय है। जो मुख्य रूप से देहरादून जिले के जौनसार– भाबर क्षेत्र में (चकराता, कालसी, त्यूणी तहसील) में निवास करती है। जौनसार का केन्द्र चकराता देहरादून से 90 किमी0 की दूरी पर स्थित है। जौनसार के पूर्व में यमुना नदी एवं पश्चिम में टोंस नदी स्थित है। टोंस नदी ही उत्तराखण्ड को हिमाँचल से अलग करती है। जौनसार भाबर का मुख्य बाजार चकराता है, जो समुद्र तल से 2118 मीटर (4919 फुट) ऊँचाई पर बसा है। चकराता एक पर्यटन स्थल के रूप में भी जाना जाता है।

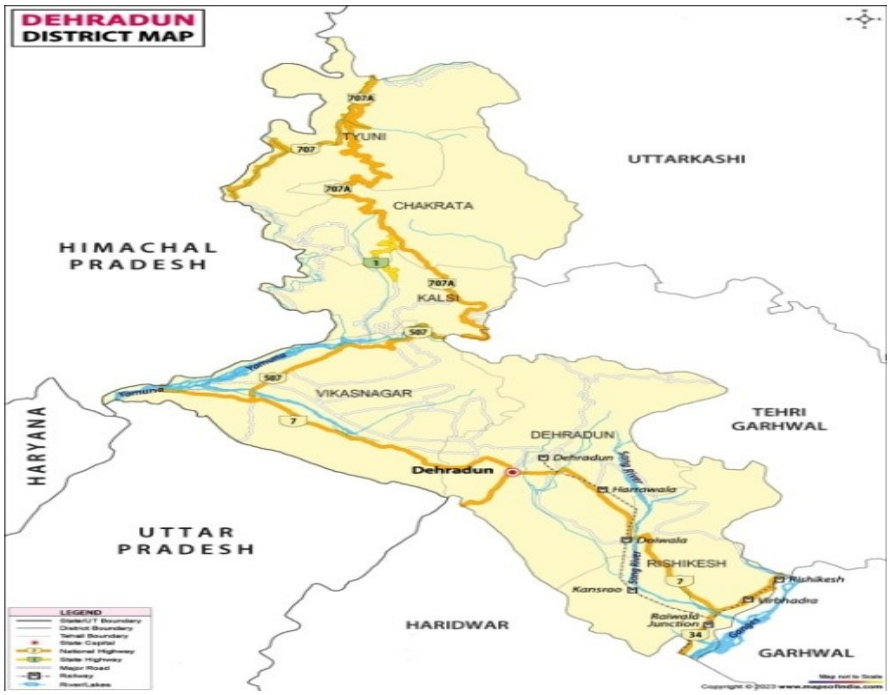

मानचित्र 3 : जनपद देहरादून

1. **उत्पत्ति एवं विकास** – इनकी उत्पत्ति इंडो आर्यन परिवार से हुई है। ये मंगोल प्रजाति के मिश्रित जनजाति है। इस जनजाति के लोग स्वयं को पांडवों का वंशज कहते हैं। विशेषकर बहुपत्नी प्रथा के कारण , जो द्रोपदी से जुड़ा है।
2. **सामाजिक संरचना और परिवार–**

- **जाति आधारित समाज**– जौनसारी समाज कोलता और खासा जैसी विभिन्न जातियों में बँटा है, जिसमें कि डोम, कोली, मोची, कोल्टा, लोहार, सोनार, बागजी, बढ़ई, खसास, बाह्मण व राजपूत।
- **पारिवारिक व्यवस्था**– परिवार की सम्पत्ति पर सभी भाईयों का समान अधिकार होता है और परिवार के मुखिया को ही महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार है।

- **भाषा**– मुख्य भाषा जौनसारी है परंतु भाबर क्षेत्र में भाबरी बोली जाती है।
- **आवास**– जौनसारी जनजातियों में प्रायः घर लकड़ी व पत्थर के बने होते हैं। वर्तमान समय में इनमें घरों में आधुनिकता की छवि दिखाई देती है।
- **प्रमुख भोजन**– जौनसार भाबर में अनेक पकवान बनाए जाते हैं, जिसमें से प्रमुख हैं– हुलुए, विनुए, कोपराड़ी या अरके, चिलड़े आदि ऐसे पकवान हैं जो आपको मुख्य रूप से जौनसार भाबर में ही खाने को मिलेंगे।

वेशभूषा / पहनावा–

- **पुरूष**– पुरूष सर्दियों से ऊनी कोट, ऊनी पजामा (झंगोली) व ऊनी टोपी (डिगुला) पहनते हें व गर्मियों में कोट, सूती टोपी पायजामा पहनते हैं।
- **महिलाएँ** – गर्मियों में कुर्ती पजामा (झंगा) सूती घाघरा व चोली (चोल्टी) पहनते हैं व सर्दियों में ऊनी घाघरा कुर्ता व राम बड़ा रूमाल (ढांट) धारण करती हैं।

3. धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन–

- **प्रमुख देवता**– इस समुदाय में लोग हिंदू धर्म में आस्था रखते हैं तथा महासू देवता इनके प्रमुख देवता है, व पांडवों से जुड़ाव महसूस करते हैं।

4. प्रमुख त्यौहार एवं संस्कृति –

- **दशहरा**– पंचाई, पांचों या पायता इत्यादि नामों से जाना जाता है।
- **दीपावली**– दियाई, बैशाखी–बिस्सू, जन्माष्टमी–अठोई, नुवाई, माघत्योहार, जागड़ा इनमें प्रमुख त्यौहार हैं।

जागड़ा महासू देवता का त्यौहार है, दीपावली इनका सबसे विशेष त्यौहार है जिसे ये राष्ट्रीय दीपावली में एक माह बाद भी मनाते हैं।

- **लोकगीत और नृत्य**– त्यौहारों और सामाजिक समारोहों में लोकगीत गाते और नृत्य करते हैं जिसमें महिलाएँ सक्रिय रूप से भाग लेती हैं।
- **विवाह प्रथा**–

1. जौनसारी जनजाति में पहले बहुपति विवाह का प्रचलन था, वर्तमान समय में जौनसारियों में बाजदिया, बेवाकी और बोईदोदीकी आदि विवाह प्रचलित है।
2. बाजदिया जौनसारियों का सबसे शान–शौकत वाला विवाह है व बेबाकी साधारण पद्धति वाला विवाह।
3. विवाह के अवसर पर जौनसारी लोग पहले गाय दहेज के रूप में देते थे।
4. जौनसारी लोग अविवाहित लड़की को ध्यंति या ध्याण और विवाहित लड़की को रियान्ती या रईण कहते हैं।

4. बुक्सा या बोक्सा जनजाति–

बुक्सा उत्तराखण्ड के तराई भाबर क्षेत्र में स्थित उधमसिंह नगर के बाजपुर, गदरपुर एवं काशीपुर नैनीताल के रामनगर पौड़ी गढ़वाल के दुगड्डा तथा देहरादून में विकासनगर डोईवाला एवं सहसपुर विकास खंडों में लगभग 173 गांवों में निवास करते हैं।

उत्तराखण्ड के उधम सिंह नगर के बाजपुर, गदरपुर व काशीपुर आदि स्थानों पर इनकी संख्या अधिक है। नैनीताल व उधम सिंह नगर के जिलों में बॉक्सर बहुल क्षेत्र बुक्साइड कहा जाता है।

मानचित्र 4 : उत्तराखण्ड राज्य

1. **उत्पत्ति एवं विकास**– इस जनजाति के लोग अपने को पवार वंश का राजपूत मानते है। कुछ विद्वान इन्हें मराठों द्वारा भगाए गए लोगों का वंशज मानते हैं तो कुछ विद्वान चितौड़ पर मुगलों के आक्रमण के समय राजपूत स्त्रियाँ और उनके अनुचर भागकर यहाँ आए और उन्हीं के वंशज होने को मानते हैं। ऐसा कहा जाता है कि बुक्सा सर्वप्रथम बनबसा (चंपावत) में 16वी शताब्दी में आकर बसे थे।
2. **सामाजिक व्यवस्था**– सामान्य रूप से यह गोत्रों या उप–जातियों में विभक्त हैं। देहरादून में महर, बॉक्स पाए जाते हैं। गोत्र इनमें समाज की व्यवहार मूलक सामाजिक इकाई है। एक गोत्र के लोग आपस में विवाह नहीं कर सकते हैं।
   - **भाषा**– भाबरी, कुमयां, रचभैंसी बोली का प्रयोग किया जाता है तथा ये जिन स्थानों पर निवास करते हैं वहीं की बोली बोलते हैं।
   - **परिधान**– धोती, कुर्ता, सदरी और सिर पर पगड़ी धारण करते हैं नगरों में रहने वाले पुरूष, शर्ट, कोट, पैन्ट तथा महिलाएँ, लहंगा, चोली तथा ओड़नी धारण करती हैं।
   - **त्यौहार**– चैती, नोबी, होली, दीपावली, नवरात्रि आदि इनके प्रमुख त्यौहार हैं। चैती इनका एक महत्वपूर्ण त्यौहार एवं मेला है।

- **शारीरिक संरचना**– बुक्सा जनजाति के लोगों का कद और आँखे छोटी, पलकें भारी, चेहरा चौड़ा, होंठ पतले एवं नाक चपटी होती है तथा इनके जबड़े मोटे और निकले हुए तथा ढाड़ी और मूँछे घनी और बड़ी होती है।
- **भोजन**– भोजन के रूप में चावल, मक्का, बाजरा, दाल, जंगली मशरूम, बाँस की कोपलें, जंगली फल (जामुन और बेर) इत्यादि ग्रहण करते हैं।

3. **धार्मिक आस्था**– बोक्सा हिंदू धर्म में अत्यधिक आस्था रखते है, ये लोग महादेव, काली, दुर्गा, लक्ष्मी, राम, कृष्ण तथा स्थायी देवी–देवताओं की पूजा करते हैं। काशीपुर की चामुंडा देवी इस क्षेत्र के बोक्साओं की सबसे प्रसिद्ध देवी मानी जाती है।
4. **अर्थ व्यवस्था**– प्राचीन समय में इनका आर्थिक जीवन फल–फूल–कंद, शहद, जंगली जानवरों का शिकार व मछली पर आधारित था। परंतु सामाजिक परिवर्तन के साथ अब ये कृषि, पशुपालन एवं दस्तकारी से अपना आर्थिक जवीन सुदृढ़ करते हैं। वर्तमान समय में ये लोग दलहन तथा तिलहन की फसलों का उत्पादन भी करने लग गए हैं। अनाज के अतिरिक्त ये लोग शीतकालीन सब्जियों का उचित व्यवसाय करते हैं, जिसमें आलू प्याज, बैंगन, गोभी, टमाटर धनिया, लहसुन इत्यादि मुख्य रूप से हैं।
5. **राजनीतिक व्यवस्था**– बोक्सा समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है, कई परिवारों से मिलकर एक बोक्सा गाँव का निर्माण होता है। गाँव में छोटे–मोटे विवादों से निपटने के लिए एक समीति होती है जिसका एक प्रधान होता है। जो गाँव के सर्वोच्च स्तर पर होता है।

5. राजी जनजाति –

हिमालय के जटिल भू–आकृति एवं जलवायुविक तंत्र में जनजाति राज्य के पिथौरागढ़ जनपद में आवासित राजी जनजाति अपनी पृथक संस्कृति के कारण भारत सरकार का ध्यान आकर्षित किया जिस कारण 1967 ई0 में बोक्सा जनजाति के साथ इसे आदिम समुदाय घोषित किया। ये जनजाति उत्तराखण्ड के धारचूला, डीडीहाट एवं वर्तमान में चम्पावत जनपद में अपनी अल्प आवश्यकताओं के साथ निवास करते हैं। वर्तमान समय में इनकी संख्या लगभग 500 है **(रावत 2021)** इस जनजाति को वनरावत या वनकन्हैया के नाम से भी जाना जाता है।

मानचित्र 5: जनपद पथौरागढ़

1. **उत्पत्ति एवं विकास** – राजी जनजाति की उत्पत्ति किरात वंश से मानी जाती है। जो अतीत में हिमालय में आकर बस गई तथा पर्यावरण के अनुकूल अपने को समायोजित कर लिया।
2. **सामाजिक व्यवस्था**–

- **सरल समाज**– राजी समाज की संरचना सरल है। जिसमें कन्याल, राकल, पाल, जैसी उपजातियाँ हैं और जातिगत भेदभाव नहीं पाया जाता है, तथा विवाह बर्हिगोत्रीय होते हैं।
- **पितृसत्तात्मक व्यवस्था**– परिवार का मुखिया सबसे बुजुर्ग पुरूष होता है, और परिवार के सभी सदस्य प्रायः पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पालन करते हैं।
- **भाषा**– राजी जनजाति के लोग वर्मा–तिब्बती भाषा का प्रयोग करते हैं। जिसमें तिब्बती व संस्कृत भाषा के शब्दों के अधिकता पायी जाती है। परंतु वर्तमान में ये कुमाऊँनी भाषा का प्रयोग करने लगे हैं **(मैठाणी 2010)** शब्दों के उच्चारण पर मूलभाषा का प्रभाव परिलक्षित होता है।
- **भोजन**– इनकी भोज्य संस्कृति पर निरंतर परिवर्तन हो रहा है। ज्यों–ज्यों बाह्य संपर्क बढ़ रहा है त्यों–त्यों फल एवं कन्दमूल के स्थान पर रोटी, दाल, सब्जी का प्रचलन करने लग गए हैं।
- **निवास**– पहले में अधिकांशतः वनों में निवास करते थे लेकिन अब झोपड़ियों व बस्तियों में निवास करते हैं। राजी समाज के लोग अपने आवास को रौत्यूड़ा कहते हैं। पत्थर की दीवार तैयार कर लकड़ी एवं पत्ती की सहायता से छप्पर डालकर छोटे–छोटे घरों का निर्माण पर्वतीय ढालों पर करते हैं। जिनका आकार खोह नुमा होता है जो कि घने जंगलों में स्थित होते हैं, शीत से रक्षा के लिए ये विशेष प्रकार के मकान तैयार करते हैं या तो गुफाओं में रहते हैं।
- **शारीरिक गठन**– राजी जनजाति गौर वर्ण सीधी नाक, काली आँखें, छोटा कद, लघु कपाल धारिता आदि शारीरिक लक्षणों से युक्त होता है। ये कद में छोटे तथा चपटे मुख वाले होते हैं। इनकी काठी मजबूत तथा होंठ कुछ बाहर की ओर होते हें। शरीर का वर्ण सामान्य रूप से गहरा व पीलापन लिए होता है तथा बाल घुमावदार होते हैं।
- **विवाह प्रथा**– ताणना (एक छोटी राशि देकर विवाह करना), मौर–बाँधिया (हिंदू रीति–रिवाजों के अनुसार फेरे लेना), खेवड़ा/नाता (विधवा विवाह), मेलबो (खर्च से बचने के लिए विवाह) तथा पलायन विवाह प्रथा का भी प्रचलन है।
- **वेशभूषा**– वेशभूषा में पारंपरिक रूप से महिलाएँ लहँगा, चोली और ओड़नी पहनती है जबकि पुरूष धोती और कुर्ता पहनते थे, परंतु आधुनिकता के प्रभाव से पुरूष पैन्ट–शर्ट और महिलाएँ साड़ी, सलवार तथा कमीज भी पहनने लग गयी हैं।
- **धर्म**– राजी जनजाति के लोग हिंदू देवी–देवताओं (काली और महावीर) तथा प्रकृति की पूजा करते हैं। ये अपने दिवंगत पूर्वजों को भी हितैषी परमात्मा के रूप में पूजते हैं।

3. **आर्थिक जीवन व्यवस्था**– इस जनजाति के कुछ परिवार अभी भी घुमम्कड़ी अवस्था में जीवन यापन कर रहे हैं लेकिन ज्यादातर लोग झूम विधि से थोड़ी–बहुत भाग में कृषि

करने लगे हैं। कृषि के साथ–साथ आखेट, पशुपालन व वन उत्पादन संग्रहण तथा मजदूरी भी करते हैं।

4. **राजनीतिक व्यवस्था**– इस जनजाति में कोई औपचारिक पद नहीं है, समाज में सबसे बुर्जुग और सम्मानित व्यक्ति निर्णय लेने और विवादों को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आपसी सहमति से परम्पराओं के आधार पर निर्णय लिये जाते हैं।

निष्कर्ष–

उत्तराखण्ड राज्य आज भी अपनी संस्कृति और पहचान बनाये रखने में विशिष्ट रूप से अग्रणी है। विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक त्यौहार, मेले इत्यादि इनकी संस्कृति और पहचान के द्योतक हैं। उत्तराखंड राज्य में, आदिवासी आबादी का मुख्य केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में है। रिकॉर्ड के अनुसार, कुल आदिवासी आबादी का लगभग 94 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है और शेष प्रतिशत जनजातीय आबादी शहरी केंद्रों में रहती है। उत्तराखंड की जनजातियों ने अपनी सदियों पुरानी पारंपरिक जीवन शैली को बरकरार रखा है। वे आदिम जीवन की विशिष्ट संस्कृति और लक्षणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके पारंपरिक मानदंड और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाएँ उनकी जातीयता निर्धारित करती हैं। आधिकारिक तौर पर उत्तराखंड पाँच जनजातियों का घर है, जिन्हें भारत के संविधान में निर्धारित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रावत जयसिंह, 2013 उत्तराखण्ड जनजातियों का इतिहास, विनर पब्लिशिंग क0 पृ0सं0 176
2. वर्मा सुभाष चन्द्र, 2016 उत्तराखण्ड की थारू एवं बुक्सा जनजातियाँ, आर0पी0 पब्लिकेशनस पृ0सं0 21
3. शर्मा, डी0डी0, 2012 उत्तराखण्ड का लोक जीवन एवं संस्कृति, हल्द्वानी, अंकित प्रकाशन।
4- सिंह कृपाल, एवं उपाध्याय नगनारायण, 2020 बुक्सा जनजाति के समाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन वॉल्यूम–8, इश्यू – नवम्बर 2020, आईएसएनएन - 2320-2882
5. बिष्ट, बी0एस0, 1997, उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति विवेक प्रकाशन दिल्ली।
6. बिष्ट बी0एस0, 1999, ''ट्राइवल डेवलपमेंटः ए केस स्टडी ऑफ हिमालयन ट्राइव्स ऑफ उत्तराखण्ड'' बैकवर्ड कम्यूनटीज आइडेन्टिटी, डेवलपमेंट एण्ड ट्रासफांमेर्शन, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
7- पांडे के0एस0 और जोखान शर्मा, 2015 वैश्वीकृत दुनिया में राजी जनजाति एक बदलते परिप्रेक्ष्य में उन्नत अनुसंधान के अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल वॉल्यूम 3, अंक–12, पृ0सं0 89–90
8- पाण्डे, बद्री दत्त, कुमाऊँ का इतिहास, अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा।